Research Paper | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | JANUARY 2025

डॉ भीमराव अंबेडकर और उनके आर्थिक विचार

श्री भगत तिगोया [1]

[1] **यूजीसी नेट अर्थशास्त्र.**

ABSTRACT:

हमारा शोध अध्याय डॉ.भीमराव अंबेडकर के आर्थिक विचारों पर आधारित है। डॉ बी आर अंबेडकर 20वीं शताब्दी के महान बुद्धि जीवियों से एक थे, उन्हें प्रमुखता बाबा साहब अंबेडकर के नाम से जाना जाता रहा है। वह एक भारतीय विधिवेता, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, मनोविज्ञानी, इतिहासकार, तथा अर्थशास्त्री थे। डॉ.अंबेडकर भारतीय संविधान के शिल्पकार के रूप में जाने जाते हैं उस दौर में जब भारत अंग्रेजी सत्ता से आजाद हुआ तो अनेक विविधता में बटे राष्ट्र को गणराज्य तथा लोकतंत्र में पिरोने के लिए अंबेडकर का योगदान अतुल्य रहा है। आर्थिक चिंतन में भी डॉ. बी आर अंबेडकर का योगदान महत्वपूर्ण रहा है, आर्थिक विचारको को हमेशा आर्थिक विकास का ध्यान रहता है उससे संबंधित समस्याओं का अध्ययन करते हैं तथा उनका समाधान सुझाते हैं अंबेडकर जी ने भी भारत देश के मूल से जुड़ी कई आर्थिक समस्याओं को उजागर किया उनका समाधान सुजाया, भले ही आज वह आर्थिक विचार व समाधान पुराने हो गए हैं परंतु उन विचारों व समाधानो में आज भी क्षमता है कि वर्तमान समय में भी भारतीय अर्थव्यवस्था को सही दिशा में निर्देशित करते हैं। बी आर अंबेडकर के आर्थिक विचारों का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि उनके विचार तथा अध्ययन भारत की वास्तविकता तथा यथार्थ से संबंधित थे और चाहे कितनी भी बड़ी बातें की जाए अगर देश की मूल जड़े कमजोर होगी तो उसका विकास कहां संभव है। अंबेडकर ने भारत की जड़त्व समस्याओं को उजागर किया तथा अपने ज्ञान से इनका समाधान भी दिया, संविधान के रूप में उन्होंने भारत के मूल को मजबूत करने का काम किया। उनके विचारों पर गौर करने पर हमें उनको मुख्य आर्थिक विचारको में रखना आवश्यक हो ही जाता है, आर्थिक विषयों में उनका योगदान अति महत्वपूर्ण है। बी आर अंबेडकर ने कृषि, औद्योगिकरण, शिक्षा, मुद्रा वित्त प्रणाली, समाजवाद, जातिरूपक समाज व्यवस्था, मिश्रित व्यवस्था, सामाजिक आर्थिक असमानता, गरीबी, बेरोजगारी, तथा भारतीय लोगों के आर्थिक सामाजिक स्थिति के संबंधित मुद्दों आदि पर अपने आर्थिक विचार व्यक्त किए हैं उनके विचार आज भी प्रासंगिक है उक्त शोध उनके कुछ महत्वपूर्ण आर्थिक विचारों को दर्शाने का एक प्रयास करता है-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
18th January 2025	19th January 2025

डॉ. बी. आर. अंबेडकर का जीवन व शैक्षणिक परिचय:

भारत का शायद ही ऐसा कोई नागरिक होगा जो डॉ बी आर अंबेडकर को नहीं जानता होगा उनके जीवन पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि उन्होंने अपने जीवन काल में काफी कठिन संघर्ष किया। उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्य प्रदेश के इंदौर जिले में स्थित सैनिक छावनी के नाम से मशहूर शहर महू में हुआ था उनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल तथा माता का नाम भीमाबाई था। अंबेडकर एक गरीब व दलित परिवार में पैदा हुए थे ,उनके पिता ब्रिटिश ईस्ट कंपनी के सेना मुख्यालय महू में सूबेदार के पद पर कार्यरत थे इसी कारण उनका आरंभिक निवास महू था तत्पश्चात उनके मूल निवास महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरी जिले में स्थित मॉड्गढ तलुका था जो कि उनकी मराठी पृष्ठभूमि से संबंधित है। अंबेडकर का जीवन बाल्यकाल से ही भेदभाव और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों का सामना करता है क्योंकि उसे दौर में ऊच-नीच, भेदभाव, अस्पर्शयता जैसी सामाजिक समस्याएं अपने चरम पर हुआ करती थी। अंबेडकर को अपनी स्कूली शिक्षा के दौरान ही इन सामाजिक कुरीतियों का सामना करना पड़ा उन्हें स्कूल के अंदर आने की अनुमति नहीं थी वह बाहर बोरी पर बैठकर ही शिक्षा ग्रहण किया करते थे तथा पानी पीने हेतु भी उन्हें उच्च जाति के व्यक्तियों पर आश्रित होना पड़ा था, कई बार उन्हें पूरा दिन बिना पानी के ही स्कूल में गुजरना पड़ता था। 1906 में 15 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह 9 वर्ष की कन्या रमाबाई के साथ कर दिया गया था। डॉ बी आर अंबेडकर बचपन से ही प्रतिभा संपन थे उनका बुद्धि स्तर अन्य छात्रों की तुलना में काफी ऊंचा था। उनके शिक्षक कृष्ण केशव अंबेडकर ने उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उनको अपना शिष्य बना लिया आगे चलकर उन्होंने उनका उपनाम अबावडेकर से परिवर्तित करके अंबेडकर रख दिया। अंबेडकर ने 1907 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करके आगे की पढ़ाई हेतु 1908 में एल्फिस्टन महाविद्यालय में प्रवेश ले लिया जो कि मुंबई विश्वविद्यालय से संबंधित था 1912 में उन्होंने अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में वहां से डिग्री प्राप्त की।1913 में शियाजी गायकवाड द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति की देन वह स्नातकोत्तर अध्ययन हेतु कोलंबिया विश्वविद्यालय अमेरिका चले गए वहां उन्होंने 1915 में अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मानव शास्त्र और इतिहास विषयों में एम की परीक्षा उत्तीर्ण की जिसमें उन्होंने 1.प्राचीन भारतीय वाणिज्य पर एक थीसिस 2.नेशनल डिविडेंड आफ इंडिया ए हिस्टॉरिकल एंड एनालिटिकल स्टडी शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। जून 1917 में छात्रवृत्ति समाप्त हो जाने के कारण वे वापस भारत लौट आए। अंत में उन्होंने 1927 में अर्थशास्त्र विषय में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की,उन्हें 1952 में कोलंबिया से एल.एल.डी तथा 1953 में उस्मानिया विश्वविद्यालय से डि.लीट उपाधि से सम्मानित किया गया। बाबा साहब ने जीवन पर्यंत सतत रूप से अध्ययन किया तथा अपना जीवन शिक्षा को सौपा। आजाद भारत को संविधान का मसौदा तैयार करके देना का भी उनका योगदान अतुल्य रहा है। उनकी शिक्षा, उनका दर्शन, उनका अर्थशास्त्र पर विचार आज भी एक सामाजिक मार्गदर्शन है।

1.डॉ.बी.आर.अंबेडकर की कुछ आर्थिक कृतियाँ:

अंबेडकर ने एक अर्थशास्त्री के रूप में अपना करियर शुरू किया और उस समय की प्रमुख आर्थिक बहसों में महत्वपूर्ण योगदान दिया, और उन्हें भारत में अपनी पीढ़ी का सर्वश्रेष्ठ अर्थशास्त्री माना जाता था डॉ. बी.आर. अंबेडकर की कुछ प्रमुख आर्थिक कृतियाँ

1.ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन और वित्त – कोलंबिया विश्वविद्यालय, 1915।

2.भारत मे लघु कृषि और उनके उपचार 1917

3.ब्रिटिश भारत में साम्राज्यवादी वित्त का विकेंद्रीकरण1921

4.रुपये की समस्या: इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान -1923

5.ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास, - एक अध्ययन इंपीरियल फाइनेंस का प्रांतीय विकेंद्रीकरण – 1925।

2.डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी के आर्थिक विचारः

जब हम डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी के आर्थिक विचारों पर बात करते है तो हमें उनके विचारों में आर्थिक दृष्टि से एक मजबूत राष्ट्रवाद की झलक दिखायी देती है। उन्होंने अपने विचार उस समय प्रस्तुत किये थे जब देश में सामाजिक आंदोलन का वातावरण संचालित था। उन्होंने अपने जीवन में रूसी क्रांति, द्वितीय विश्व युद्ध और भारत के औपनिवेशिक विरोधी संघर्ष जैसी युगान्तरकारी घटनाओं को देखा था। सन 1930 की महामंदी भी उन्हीं के जीवन काल की एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसने किस प्रकार सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया था। इन सभी घटनाओं ने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी को ऐसे आर्थिक घटकों को प्रोत्साहित करने के लिये प्रेरित किया था जिनसे एक राष्ट्र का मजबूत आधार स्तंभ खड़ा होता है इसलिये उनके विचारों में कृषि, औद्योगिकरण, भारतीय मुद्रा की समस्या, भूमि सुधार मानव पूँजी की अवधारणा, श्रम समस्या, महिलाओं का आर्थिक उत्थान जाति व्यवस्था का अर्थशास्त्र, कराधान नीति तथा जल संसाधन नीति आदि आर्थिक घटकों का वर्णन मिलता है। आर्थिक समस्याओं के दृष्टिकोण से डॉ. बी. आर. अम्बेडकर न केवल एक अर्थशास्त्री थे बल्कि वे एक वित्तीय विशेषज्ञ भी थे। डॉ. अंबीराजन (एक प्रख्यात प्रोफेसर) ने डॉ. अम्बेडकर जी के बारे में कहा था कि डॉ. बी. आर. अम्बेडकर उन पहले भारतीयों में से एक थे जिन्होंने अर्थशास्त्र में औपचारिक शिक्षा पायी और एक पेशेवर की तरह ज्ञान की इस शाखा का अध्ययन तथा उपयोग किया था।" । उन्होंने अपने विचारों में आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ विभिन्न वित्तीय संस्थाओं के निर्माण पर भी विशेष जोर दिया था। आज हमारे सामने केन्द्रीय बैंक के रूप में जो भारतीय रिजर्व बैंक अस्तित्व में हैं वह उन्हीं के वित्तीय विचारों की देन हैं इसीलिये प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रामचन्द्र गुहा ने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के बारे में कहा था कि "उनकी विरासत विशेष हितों के अनुकूल हैं, वह एक महान विद्वान, संस्थागत का निर्माणकर्ता तथा अर्थशास्त्री थे। प्रसिद्ध भारतीय मूल के अर्थशास्त्री तथा नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. (डॉ.) अमर्त्य सेन ने तो यहाँ तक कह दिया था कि "डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मेरे अर्थशास्त्र के पिता हैं।" उन्होंने कहा कि वे न केवल दलित, पिछड़े और गरीब लोगों का उत्थान करने वाले महान विद्वान थे बल्कि वे आज जो कुछ है यह उससे कहीं अधिक के हकदार भी हैं हालोंकि ये अपने देश में जाति व्यवस्था के कारण एक विवादस्पदा व्यक्ति थे लेकिन फिर भी अर्थशास्त्र में उनका योगदान अद्वितीय रहा हैं और इसके लिये उन्हें हमेशा याद किया जायेगा। डॉ. बी. आर अम्बेडकर जी इसलिये भी एक महान अर्थशास्त्री के रूप में माने जाते हैं क्योंकि वे उस समय के विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्रीयों जैसेः एडविन सैलिगमेन, जॉन डेवी, ऐलेक्जेंडर गोल्डनवायजर आदि के समकालीन थे या यह कहा जा सकता है कि वे इन अर्थशास्त्रीयों से प्रभावित थे "एडविन सैलिगमैन सार्वजनिक वित्त के सबसे अग्रणी अर्थशास्त्री थे. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी ने उनके मार्गदर्शन में कोलंबिया शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था जो विशेष रूप से राज्य तथा केन्द्र सरकारों के बीच वित्तीय संबंधों पर आधारित था।" जबकि जॉन डेवी एक उत्कृष्ट अमेरिकी दार्शनिक थे जो कोलंबिया विश्व विद्यालय में उनके शिक्षकों में से एक थे "एलेक्जेंडर गोल्डनवायजर एक ऐसे अर्थशास्त्री थे जो समाज में व्याप्त भेदभाव के सख्त खिलाफ थे इसीलिये उन्होंने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी को भारत की जाति व्यवस्था पर शोध प्रबंध हेतु प्रोत्साहित किया था जो बाद में सन 1917 में एंटीक्यारी में प्रकाशित हुआ था।" इन्हीं महान अर्थशास्त्रीयों के विचारों से प्रभावित होकर या उनके निर्देशानुसार कार्य करने के कारण ही डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर एक महान तथा विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री के रूप में उभरकर आये थे।

3.कृषि अर्थशास्त्र में योगदानः

19वीं सदी की शुरुआत में भारतीय कृषि की मुख्य समस्या कम उत्पादकता थी। अंबेडकर ने इसका कारण बहुसंख्यक किसानों के पास छोटी-छोटी ज़मीन होना बताया। उनका मानना था कि छोटी-छोटी ज़मीन रखने के बजाय ज़मीन को चकबंदी करके बड़े पैमाने पर खेती करनी चाहिए। चकबंदी का स्वामित्व राज्य के पास होना चाहिए। 1917 में एक समिति गठित की गई जिसने सुझाव दिया कि राज्य को निजी मालिकों, किरायेदारों और बंधककर्ताओं से भूमि अधिग्रहण करना चाहिए और उन्हें आवश्यक मुआवजा देना चाहिए और फिर अधिग्रहित भूमि को सही आकार में मूल कृषकों में वितरित करना चाहिए। लेकिन अंबेडकर ने इस बात की आलोचना की कि सही आकार क्या हो सकता है। चूंकि भूमि केवल एक कारक है, इसलिए उत्पादन के अन्य कारक भी हैं जैसे श्रम और पूंजी जो भूमि की कम उत्पादकता में योगदान करते हैं। अपर्याप्त मात्रा में पूंजी, अधिशेष श्रम के कारण कम रिटर्न और अपर्याप्त सिंचाई के कारण कृषि में कम उत्पादकता है। अंबेडकर ने अपने शोधपत्र "भारत में छोटी जोत और उपाय (1918)" में कुछ उपचारात्मक उपाय सुझाए हैं जो इस प्रकार हैं:

1) औद्योगीकरण जो अधिशेष श्रम को अवशोषित करेगा (छिपी हुई बेरोजगारी)

2) राज्य के स्वामित्व वाली सहकारी खेती, जो भूमि की उत्पादकता सुनिश्चित करेगी और उत्पादन लागत को भी कम करेगी।

यही मॉडल नोबेल पुरस्कार विजेता आर्थर लुईस ने 1950 में पेश किया था जिसमें अधिशेष श्रम को, जिसकी सीमांत उत्पादकता शून्य है, पूंजीवादी क्षेत्र में स्थानांतरित करना शामिल है जो उन्हें अवशोषित कर लेगा। लेकिन बाबा साहब ने यह विचार लुईस से बहुत पहले 1918 में दिया था।

4.भूमि सुधार उपायः

अंबेडकर का मुख्य आर्थिक योगदान भारत में भूमि जोत प्रणाली से संबंधित था। उन्होंने आर्थिक जोत की मौजूदा परिभाषा की आलोचना की, जिसे उत्पादन के बजाय उपभोग के दृष्टिकोण से परिभाषित किया गया था। उनके अनुसार "इसलिए, कोई भी परिभाषा जो उपभोग पर आधारित है, वह आर्थिक जोत की प्रकृति को गलत बताती है जो अनिवार्य रूप से उत्पादन में एक उद्यम है। उत्पादन के उद्देश्य के लिए जो अधिक महत्वपूर्ण है वह उत्पादन के कारकों को संयोजित करने की प्रक्रिया है"। भारत में कृषि का सबसे बड़ा दोष अधिशेष बनाने में विफलता थी, जिसके कारण अंततः पूंजी की कमी हो गई। कम कृषि उत्पादकता के कारक के कारण, समग्र आर्थिक विकास की प्रक्रिया प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई। अंबेडकर का मत था कि जोत के समेकन की प्रक्रिया गैर-आर्थिक जोत के बुरे प्रभावों को खत्म कर सकती है और किसानों के कल्याण को बढ़ा सकती है। उन्होंने भारतीय कृषि क्षेत्र पर औद्योगीकरण के अनुकूल प्रभाव की भी व्याख्या की है। जैसा कि उन्होंने कहा था "औद्योगीकरण एकीकरण को सुगम बनाता है। यह भविष्य में विभाजन और एकीकरण के विरुद्ध एक बाधा है"। अंबेडकर कुछ लोगों द्वारा भूमि जोत के नियंत्रण के विरुद्ध थे। उनका मत था कि राज्य को निजी मालिकों के पास मौजूद सारी कृषि भूमि का अधिग्रहण कर लेना चाहिए। सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों द्वारा आवश्यक भूमि को मानक आकार के अनुसार वितरित करना चाहिए।

5.भारतीय मुद्रा पर अम्बेडकर के विचार :

डॉ.बी.आर. अम्बेडकर के विचार वर्तमान भारतीय नकदी ढांचे को बहुत प्रभावित करते हैं। ब्रिटिश मानक के तहत जब भारत सरकार भारतीय रुपये के गिरते अनुमान से जूझ रहे थे, डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने अपनी पुस्तक "रुपये की समस्या: इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान (1923)" प्रकाशित की। यह पुस्तक उस समय भारतीय मुद्रा की समस्या का विश्लेषण करती है जब ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार और भारतीय व्यापार हितों के बीच टकराव था। उन्होंने लंदन में अपने डॉक्टरेट थीसिस में यह पुस्तक प्रस्तुत की। उन्होंने ब्रिटिश भारत के दौरान भारतीय धन की स्थिति पर अपनी जांच और शोध को केंद्रित किया उन्होंने इस पर शोध प्रस्ताव तैयार किया। इस पुस्तक के अंतर्गत उन्होंने विनिमय दर और कीमतों में स्थिरता के लिए तर्क दिया। अपने सिद्धांत में, उन्होंने तर्क दिया कि सोने के व्यापार मानक में स्थिरता नहीं है। भारत जैसे निर्माण करने वाले देश सोने के व्यापार मानदंडों की लागत का प्रबंधन नहीं कर सकते हैं, इससे अधिक यह मूल्य वृद्धि के खतरे को भी बढ़ाता है। उन्होंने अंतर्दृष्टि की जानकारी और कारणों के साथ प्रदर्शित किया कि कैसे भारतीय रुपये ने अपना मूल्य खो दिया है और इस प्रकार रुपये की खरीद तीव्रता गिर रही है। यही कारण है कि अंबेडकर विनिमय दर स्थिरता के बजाय मूल्य स्थिरता के विचार के साथ आए। उन्होंने सुझाव दिया कि सरकारी कमी को दूर किया जाना चाहिए और पैसे का एक वृत्ताकार प्रवाह होना चाहिए। उन्होंने यह भी प्रस्तावित किया कि रूपांतरण पैमाने पर निर्भरता की तुलना में मूल्य ठोसता पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए उनका यह ज्ञान अनिवार्य रूप से भारतीय रिजर्व बैंक की नींव को प्रेरित करती है। उनके विचार ने भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना का भी मार्ग प्रशस्त किया। उनके विचार और विचारधाराएँ इतनी अंतर्दृष्टिपूर्ण हैं कि हर किसी को, खासकर आज के विश्व अर्थशास्त्री को, उनके काम को अवश्य पढ़ना चाहिए। अंबेडकर ने जॉन मेनार्ड कीन्स के सुझाव के विपरीत स्वर्ण मानक के पक्ष में तर्क दिया कि भारत को स्वर्ण विनिमय मानक अपनाना चाहिए।

6.महिलाओं का आर्थिक उत्थानः

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर जी ने अपने आर्थिक विचारों में महिलाओं के आर्थिक उत्थान को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया था। उनका कहना था कि महिलाऐं, जो कि सदियों से पुरुषों द्वारा

उपेक्षित एवं दयनीय स्थिति में अपना जीवन यापन कर रही हैं, उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को उच्च करना अति आवश्यक हैं क्योंकि किसी भी देश में महिलाओं के बिना राष्ट्र का आर्थिक उत्थान असंभव हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत में महिलाओं की खराब स्थिति के कारण ही राष्ट्र की आर्थिक प्रगति बाधित हो रही हैं इसलिये महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधान लाने एवं उन्हें देश की मुख्यधारा से जोड़ने के लिये उनका आर्थिक उत्थान आवश्यक हैं। डॉ. बी. आर.अम्बेडकर के अनुसार "मैं उस प्रगति की डिग्री को समुदाय की प्रगति को मापता हूँ जिसे महिलाओं ने प्राप्त किया हैं। डॉ

7.श्रम विवादों का तंत्र एवं श्रमिक समस्याएँ:

बी. आर. अम्बेडकर एक समाज सुधारक की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण मानवतावादी दृष्टिकोण भी रखते थे इसीलिये उन्होने नमिल या कारखानों में कार्य करने वाले श्रमिकों के कल्याण हेतु भी अपने विचार व्यक्त किये थे। पूंजीवाद को नियंत्रित करने के लिए, अम्बेडकर ने भारत में ट्रेड यूनियन आंदोलनों और उनकी हड़तालों का समर्थन किया व उद्योगों के 'प्रबंधन में श्रम भागीदारी' की वकालत की है। उन्होंने विदेशों में तकनीकी शिक्षा लेने के इच्छुक अछूत छात्रों की मदद की। श्रम आयोग के सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में डॉ. अम्बेडकर ने कहा कि " औद्योगिक अव्यवस्था को रोकने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं।सुलह के लिए मशीनरी, व्यापार में संशोधन विवाद अधिनियम और न्यूनतम वेतन कानून। यदि इसे आधार बनाया जाए तो औद्योगिक शांति को साकार किया जा सकता है वे पूँजीवाद के खिलाफ हडताल के समर्थक थे। वे चाहते थे कि औद्योगिक प्रबंधन में मजदूरों की भागीदारी भी होनी चाहिये। जिससे उनके साथ किसी भी प्रकार का शोषण न हो सके, उन्होंने मजदूरों के आर्थिक कल्याण हेतु संविधान में कार्य के घण्टे, अवकाश, न्यूनतम मजदूरी तथा स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं के लिये स्पष्ट निर्देश एवं अधिनियम जारी किये थे ताकि किसी भी श्रमिक का मिल मालिकों द्वारा शोषण न हो सके। उनके अनुसार "यदि औद्योगिक प्रबंध सामाजिक न्याय पर आधारित होता हैं तो औद्योगिक शांती कायम रह सकती हैं। इसके लिये उन्होंने केन्द्र सरकार में अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगों के लिये 5 से 6 के आरक्षण की व्यवस्था की थी" जिससे देश में एक न्यायपूर्ण औद्योगिक प्रबंध कायम हो सके।

8. कराधान नीति:

डॉ बी आर अंबेडकर ने 1936 में अपनी 'स्वतंत्र मजदूर पार्टी' में कराधान नीति पर अपने विचार व्यक्त किए। वे विशेष रूप से ऐसे करो के विरोध में थे जिनका प्रभाव समाज के गरीब लोगो पर पड़ता था उन्होंने भूमि राजस्व प्रणाली और भूमि कर प्रणाली का विरोध किया क्योंकि यह समाज के गरीब वर्गों पर बोझ होगा। उनका कहना था कि किसी भी देश की सरकार द्वारा कर इस प्रकार लगाये जाने चाहिये। जिससे कि करदाताओं को सुविधा हो,. इसके लिये उन्होंने एक उपाय दिया और यह था "कराधान क्षमता" अर्थात एक उत्तम कर वह कर होता है जो कि लोगो की आर्थिक क्षमता के अनुसार लगाया गया हो, उन्होंने कहा कि कर को एक निश्चित सीमा तक छूट के साथ प्रगतिशील होना चाहिये, विभिन्न करों में से भूमि कर (कृषि भूमि पर लगने वाला कर) अधिक लचीला एवं आसान होना चाहिये। जिससे कृषि उत्पादन पर किसी भी प्रकार का प्रभाव न पड़े तथा अन्य लोगों के साथ-साथ कृषकों का जीवन स्तर भी उच्च बना रहे आदि। उन्होंने कराधान के निम्नलिखित सिद्धांत सुझाए:

a. कर, भुगतानकर्ता की क्षमता के आधार पर लगाया जाना चाहिए न कि आय पर।

b. गरीबों पर टैक्स कम और अमीरों पर ज्यादा होना चाहिए।

c. कर में छूट एक निश्चित सीमा तक दी जानी चाहिए।

d. कर लगाने में विभिन्न वर्गों के बीच समानता होनी चाहिए।

e. कराधान से लोगों के जीवन स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

9.गरीबी एवं बेरोजगारी:

डॉ. अम्बेडकर ने यह स्वीकार किया कि भूमि के टुकड़े-टुकड़े होना और उन पर जनसंख्या के दबाव के कारण ही कृषक गरीब है। इसका समाधान यह है कि पुराने उद्योगों को बहाल किया जाय और नये उद्योग चालू किये जायें। उन्हें तकनीकी शिक्षा प्रदान की जाय। स्पष्ट है कि अम्बेडकर गरीबी एवं बेरोजगारी समाप्त करने के लिए कृषि क्षेत्र में सामूहिक कृषि को अपनाने तथा उद्योग क्षेत्र में नये उद्योग लगाने एवं पुराने उद्योगों को बहाल करना मुख्य उपचार मानते थे। उन्होंने बताया कि किसानों और मजदूरों को बिना किसी जाति पांति के भेद के एक मजदूर संगठन कायम करना चाहिए और विधानसभाओं में योग्य वक्ता चुनकर भेजना चाहिए। जो उनका प्रतिनिधित्व कर सके। आर्थिक असमानता के बारे में उन्होंने लिखा है कि जब तक समाज में आर्थिक समानता के साथ सामाजिक समानता स्थापित नहीं हो जाती देश का सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता।

निष्कर्ष

शोध निष्कर्षों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अंबेडकर का काम बहुत समृद्ध था। अंबेडकर की पहल ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है और आज भारत में सामाजिक-आर्थिक नीतियों और कानूनी प्रोत्साहनों को देखने के तरीके को बदल दिया है। उनकी धारणा गरीबी को दूर करने और सभी के लिए संसाधनों तक समान पहुँच की अनुमति देने की थी। उनके सिद्धांत अब अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों में शामिल किए गए हैं। उनका काम एक मार्गदर्शक दस्तावेज के रूप में काम कर सकता है। उन्होंने अपने अध्ययन के क्षेत्र में कार्यरत और बेरोजगार, पुरुष और महिला, औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्र, तकनीशियन आदि को शामिल किया। उनके अनुसार एक समाज तब विकसित होता है जब सभी वर्ग अपनी जाति, पंथ या धर्म से परे एक साथ चलते हैं। उनके आर्थिक निष्कर्ष अभूतपूर्व हैं। बाबासाहेब ने मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने के लिए संशोधित स्वर्ण मानक का समर्थन किया, ब्रिटिश शासन के तहत प्रांतीय वित्त के विकास पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि जनता का सरकार पर बहुत भरोसा है, इसलिए उसे करों के रूप में उन्हें दिए गए सार्वजनिक धन का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए, उत्पादकता बढ़ाने के लिए समेकित भूमि जोत होनी चाहिए, उन्होंने राज्य समाजवाद की वकालत की। उनके अनुसार जाति व्यवस्था देश की आर्थिक वृद्धि और विकास, महिला सशक्तिकरण आदि में एक बड़ी बाधा थी।

REFERENCES

1. Dr. B.R. Ambedkar : True Leader, Not A False God (Manoj Kumar Trivedi) 2023

2. A Part Apart: The Life and Thought of B.R. Ambedkar (Ashok Gopal) 2023

3. Ambedkar Economic Philosophy (Pramila Krishnan and Supriya Iyer) 2019

4. The Problem of the Rupee (Dr. B. R. Ambedkar) 2024

5. Economic Thought Of Dr.B.R.Ambedkar (Odeyar D.Heggade) 2010